अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वविज्ञ (वर्ष : 2025) दिनांक : 14.08.2025

समय सीमा : 3 घंटा प्रथम वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

भगवती भाष्य (खंड-1)–70

प्र. 1 कोई छह पारिभाषिक शब्द लिखें– 6

(क) विस्तृत बोध का अभाव।

(ख) चतुर्गति गमन के अनुबंध का व्यवच्छेद होना।

(ग) जिसके पास इतना धन हो कि उसके धन के ढेर में छिपा हाथी भी ना मिले।

(घ) अक्रम अर्थात् एक साथ होना, जिसमें पूर्व और पश्चात का विभाग न हो।

(ड़) शरीर और मन को पीड़ा देने वाला बाह्य और आंतरिक कारण।

(च) जो स्थविर अनशन की विधि सम्पन्न कराने में कुशल होते हैं।

(छ) विशिष्ट संज्ञा (नाम) के अनुरूप आचरण करने वाला।

(ज) नाड़ी का जाल।

प्र. 2 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें– 6

(क) संयम और संवर में क्या अंतर है?

(ख) निश्चिछद्र प्रश्न व्याकरण वाला कौन होता है?

(ग) धवला के अनुसार आहारक समुद्घात के तीन प्रयोजन क्या है?

(घ) 'पमाइयव्वं' शब्द का अर्थ बताएं?

(ड़) मुनि को शोधि क्यों कहा गया है?

(च) अलमस्तु से क्या तात्पर्य है?

(छ) पर्याय को सापेक्ष सत्य क्यों कहा गया है?

(ज) नमस्कार महामंत्र किस आगम के किस सूत्र का अंग है?

प्र. 3 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दें– 30

(क) जिन न होते हुए भी जिन के सदृश किसे कहा गया है?

(ख) कार्य की उत्पत्ति के कितने प्रकार हैं और उनका कालमान कितना है?

(ग) ये क्यों कहा गया है कि जीव आत्मारम्भक, परारम्भक और उभयारम्भक है?

(घ) मस्तिष्क में ज्ञान कोषों की रचना की तरतमता का क्या आधार है?

(ड़) बस्ती के बारह प्रकारों के नाम बताते हुए किसी एक का अर्थ लिखें।

(च) 'तमेव सच्चं णीसंकं ज जिणेहिं पवेइयं' का क्या अर्थ है?

(छ) कर्म विपाक की पृष्ठभूमि में कितने और कौन से नियम कार्य करते हैं?

(ज) नरक के जीवों में अस्सी भंग के कौन से स्थान प्रतिपादित किए गए हैं?

(झ) कुत्रिकापण किसे कहते हैं? तथा स्थविर मुनियों की इससे क्यों तुलना की गई है?

(ञ) सब मनुष्य समान कर्म वाले क्यों नहीं होते?

(ट) मुनि के लिए निरोध, प्रहान और व्यवच्छेद भी क्यों आवश्यक है?

प्र. 4 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर 5-7 पंक्तियों में दें– 15

(क) सम्यक् दृष्टि मनुष्य के सभी भेदों को लिखते हुए बताएं कि वे कितनी-कितनी क्रियाएं करते हैं?

(ख) लेश्या और योग में क्या अंतर है यंत्र द्वारा बताएं।

(ग) उपपद्यमान, उत्पन्न, उदवर्तमान और उदवृत् से क्या तात्पर्य है?

(घ) भावशल्य-मरण और द्रव्यशल्य-मरण किसे कहा गया है और यह किसके होता है?

प्र. 5 शून्यकाल, अशून्यकाल एवं मिश्रकाल को विस्तार से व्याख्यायित करते हुए बताएं कि तीनों में कौन किससे अल्प, बहुत, तुल्य अथवा विशेषाधिक है? 13

अथवा

तापस, कान्दर्पिक, चरक-परिव्राजक, किल्विषिक, तिर्यंच, आजीविक, आभियोगिक और दर्शनभ्रष्ट स्वतीर्थिक जैन मुनि वेषधारी कौन होते हैं और किस देवलोक में उत्पन्न होते हैं?

झीणी चर्चा–30

प्र. 6 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्ति में दें– 10

(क) शुभ लेश्या को आश्रव और निर्जरा क्यों कहा गया है? यह कौन से आश्रव में समाविष्ट होती है?

(ख) दर्शनावरणीय कर्म का उदय छह में कौन, नौ में कौन?

(ग) चतुर्थ गुणस्थान में सम्यक्त्व संवर क्यों नहीं माना गया है?

(घ) अनुयोग द्वार में औपशमिक भाव के आठ बोल कौन-कौन से हैं?

(ड़) प्रथम तीन गुणस्थान छह द्रव्य में कौन तथा नौ पदार्थ में कौन?

(च) कौन-कौन से गुणस्थान छह द्रव्य में जीव और नौ पदार्थ में जीव और निर्जरा है?

(छ) भगवान ने छठे गुणस्थान में कितनी क्रियाएँ बतलाई हैं एवं किस दृष्टि से?

(ज) 13वें एवं 14वें गुणस्थान में कितनी व कौन सी आत्माएँ होती हैं?

(झ) जयाचार्य ने कषाय को उन्मार्ग कहा है लेकिन अधर्म नहीं, किस अपेक्षा से?

(ञ) आयंबिल और नीवीं ये सब कौन सी करणी एवं कौन सी आत्मा है?

(ट) द्रव्य पुद्गल और भाव पुद्गल सावद्य है या निरवद्य, शाश्वत है या अशाश्वत स्पष्ट करें।

(ठ) जहाँ कषाय आत्मा है, वहाँ कितनी आत्माओं की नियमा है, कितनी आत्माओं की भजना है?

प्र. 7 किन्हीं तीन पद्यों का शब्दार्थ करें– 12

(क) खायक-सम्यक्त्व वालो दशमें, उपशम श्रेण जो भावै रै।
अजघन्य-उत्कृष्टा पांच भाव छै, देश चारित्र मोह दबावै रै।।

(ख) आउखो-खायक छ-मांहि पुद्गल, नव में अजीव पुण्य बंध कहाय।
चवदमा गुणठाणै थी सिद्ध होवै, त्यांरै आयु-खायक तिण सूं शुभ जणाय।।

(ग) आश्रव भाव उदै परिणामी, छ में जीव सुलहियै।
नव में जीव अरु आश्रव जाणो, सावज पिण तसु कहियै।।
ऊजल लेखे निरवद नहिं छै, निरवद करणी लेखे।
असासतो त्रिहुं काल अपेक्षा, भाव जीव संपेखे।।

(घ) मिथ्यात्त अव्रत प्रमाद कषाय, ए चिहुं लेस्या नांय।
जोग-आसव पिण असुभ जोग में, असुभ-लेस्या तीनूं आय।।

प्र. 8 प्रथम ढाल के अनुसार द्रव्य लेश्या-भाव लेश्या को विस्तार से समझाइये। 8

अथवा

ढाल 5वीं के अनुसार गुणस्थान और भाव अर्थात् गुणस्थान स्वयं कितने भावात्मक है तथा गुणस्थान-संवर या निर्जरा किस पदार्थ में समाविष्ट होते हैं।